



बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय

बाँदा - २१०००१ (उ०प्र०)

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 100/2024) Year: 6th

जिला: बाँदा

जारी करने की तिथि:

21/02/2024

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	शाक-भाजी	<p>अगेती एवं बेमौसमी उत्पाद हेतु मूली, पालक, कुल्फा, चौलाई, लोबिया, भिंडी, लौकी, करेला, कद्दू, तरोई, खीरा, ककड़ी, की भी बुआई करें।</p> <p>ग्रीष्म कालीन टमाटर, बैंगन, शिमला मिर्च/मिर्च रोपाई कर लें।</p> <p>शीत ऋतु की खड़ी फसलों में समुचित जल, खरपतवार, पोषक तत्व तथा पादप सुरक्षा प्रबंधन करे।</p> <p>ग्रीष्म कालीन भिंडी व कद्दू वर्गीय सब्जियों की बुआई के उपरांत पलवार प्रयोग करें।</p> <p>खड़ी फसलों में माहू जैसे कीड़ों का प्रकोप हो सकता है अतः विशेषज्ञ के अनुसंसा अनुसार प्रबंधन करें।</p>
2-	शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन	<ul style="list-style-type: none">➤ गेहूँ की फसल में समय समय पर पानी लगाना आवश्यक है! फसल की अवस्था एवं मृदा के अनुरूप एक निश्चित अन्तराल पर पानी लगाना लाभदायक होता है➤ समय से बोयी गयी सरसों की फसल अब परिपक्वताके करीब है ! इसकी समय पर कटाई सुनिश्चित की जानी चाहिए !➤ खेत खली होने की दशा में मुंग एवं उरद की बोआई का कार्य शुरू कर दें! बोआई के समय १८ किग्रा नत्रजन व ४५ किग्रा फॉस्फोरस की मात्रा का प्रयोग प्रति हेक्टेयर की दर से करें!➤ इसके लिए लगभग ४० किग्रा डी०ए०पि० प्रति एकड़ की दर से खेत में देना चाहिए! बीजों की बोआई अगर सीडड्रिल से की जाए तो अच्छा रहता है!➤ इस तरह से खाद एवं बीज दोनों मिट्टी में एक साथ यथा स्थान दिया जा सकता है! बोआई से पहले बीजों को राईजोबियम कल्चर से उपचारित करना लाभदायक रहता है! <p>१ किग्रा बीज के लिए ४ ग्राम राईजोबियम कल्चर या ४-६ मिली तरल राईजोबियम को १० प्रतिशत गुड़ के घोल के साथ मिलाकर उपचारित करें! उपचार के बाद बीजों को ३० मिनट तक छाया में सुखाकर बोआई शुरू करें!</p>
3-	पशुपालन प्रबंधन	<p>सर्दी के मौसम में मुर्गीपालन करते समय निम्न सावधानियाँ मुर्गीपालकों को बरतनी चाहिए -</p> <ul style="list-style-type: none">• सर्दी के मौसम में मुर्गीपालन करते समय विशेषकर चूजों को ठण्ड से बचाने की व्यवस्था करनी चाहिए। उन्हें उनके शेड में कृत्रिम गर्मी प्रदान करने की

		<p>व्यवस्था अंगीठी, कोयला, हीटर, पेट्रोलियम गैस इत्यादि माध्यम से करनी चाहिए।</p> <ul style="list-style-type: none"> • ब्लूडर का तापमान सामान्यतः 30 डिग्री सेल्सियस तक रखना चाहिए जिससे चूजे ठण्ड से बचे रहें। चूजों के ब्लूडर में आने से कम से कम 2-4 घंटे पहले ही ब्लूडर चालु कर देना चाहिए। • जाड़े के मौसम में चूजों को ठण्ड लगने से सर्दी खांसी की बीमारी होने का डर रहता है, ऐसे मौसम में मुर्गियों को विटामिन मिनरल मिश्रण प्रदान करना चाहिए जिससे मुर्गियों में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ेगी व ठण्ड से लड़ने की शक्ति मिलेगी। • सर्दियों के मौसम में मुर्गीओं के आरामदायक आवास की व्यवस्था भी अत्यंत आवश्यक है। जाड़े में कम से कम 6 इंच की अच्छी गुडवत्तापूर्ण विछावन मुर्गी घर के अंदर विछावें, अच्छी विछावन मुर्गियों को फर्श की ठण्ड से बचाता है तथा तापमान भी नियंत्रित करता है।
4-	कीट-प्रबंधन	<ul style="list-style-type: none"> ➤ राई/सरसों में माँहू के जैविक नियंत्रण हेतु एजाडिरैक्टिन (नीम ऑयल) 0.15 प्रतिशत ई0सी0 2.50 लीटर प्रति हे0 की दर से 600-700 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें जिससे परभक्षी कीटों व मित्र कीटों का संरक्षण किया जा सके। कीट के रासायनिक नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस0एल0 250 मिली0 की मात्रा को 600-750 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये। ➤ चना/मटर/ मसूर में फली बेधक के नियंत्रण हेतु फसल की नियमित निगरानी करते रहें 5 फेरोमोन ट्रेप प्रति हे0 की दर से खेत में लगायें। आवश्यकतानुसार नीम गिरी 4 प्रतिशत अथवा एच0एन0पी0वी0 250 एल0इ0 250-300 मिली0 300-400 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से सायंकाल छिड़काव करके कीट का जैविक नियंत्रण करें। सेमीलूपर कीट के रासायनिक नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 की 2 लीटर मात्रा प्रति हे0 की दर से 600-700 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये। ➤ अरहर में फली की मक्खी कीट से प्रकोपित फलियों की दशा में एसीफेट 75 प्रतिशत एस0 पी0 1 ग्राम प्रति लीटर अथवा लैम्ब्डा साह्यलोथ्रिन 5 प्रतिशत ई0सी0 0.8 मिली0 प्रति लीटर अथवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस0एल0 3 मिली0 को 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। ➤ सब्जियों में कीटों के नियंत्रण हेतु नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए। बैंगन की फसल में कलंगी एवं फल बेधक कीट के नियंत्रण हेतु 10 मीटर के अन्तराल पर प्रति हेक्टेयर में 100 फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क नर कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए व क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल कीटनाशी की 100 मिलीलीटर मात्रा को 250 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से 10 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करना चाहिए। टमाटर में फल बेधक सूड़ी के नियंत्रण हेतु एजाडिरैक्टिन 0.15 प्रतिशत की 2.5 लीटर मात्रा को 500-600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से आवश्यकतानुसार 8-10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें। फूलगोभी, पत्तागोभी में डायमंड बैक मोथ की निगरानी हेतु फेरोमोन प्रपंच 3-4/एकड़ लगाए व बैसिलस थूरिनजिएन्सिस (बी0टी0) 1.0 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से

		<p>400–500 ली० पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तराल पर सायंकाल छिड़काव करना चाहिए। रस चूसने वाले कीटों के नियंत्रण हेतु थायोमैथोक्साम 25 प्रतिशत डब्लू० जी० 3 ग्राम को 10 लीटर अथवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस०एल० 3 मिली० को 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।</p> <ul style="list-style-type: none"> ➤ आम में मिली बग कीट व भुनगा कीट के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस०एल० की 0.3 मिली० अथवा बुप्रोफेजिन 25 प्रतिशत एस०सी० 2 मिली० प्रति लीटर पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तराल पर 2–3 छिड़काव करें।
5-	पादप रोग प्रबंधन	<ul style="list-style-type: none"> ➤ इस मौसम में सरसो की पछेती फसल में अल्टरनरिया झुलसा व चूर्णिल आसिता (पाउडरी मिल्ड्यू) रोग के संक्रमण होने की सम्भावना है किसान भाई खेत की निगरानी करते रहे रोग के लक्षण दिखाई देने पर हेक्साकोनाजोल 2 ग्रा० प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करें। ➤ गेंहू की फसल में पर्ण धब्बा (स्पाट ब्लाच) रोग का प्रकोप होने की दशा में फसल में प्रापीकोनाजोल एक मिली. प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करें। ➤ इस मौसम में प्याज की समय से बोयी गई फसल में परपल ब्लॉस रोग की निगरानी करते रहें। रोग के लक्षण पाये जाने पर डाएथेन- एम-45 @ 2 ग्रा. /ली. पानी किसी चिपकने वाले पदार्थ जैसे टीपोल आदि (1 ग्रा. प्रति एक लीटर घोल) में मिलाकर छिड़काव आसमान साफ होने पर करें।
6.	बागवानी प्रबंधन	<p>फरवरी यानी माघ-फाल्गुन माह में भी वातावरण ठंडा होता है परन्तु जनवरी माह की तुलना में तापक्रम अधिक होता है। गर्मी का थोड़ा आभास होने लगता है। वायुगति बढ़ जाती है और सापेक्ष आद्रता बीते माह की अपेक्षा कम हो जाती है। माह के दूसरे पखवाड़े से मौसम सुहाना होने लगता है। औसतन अधिकतम एवं न्यूनतम तापक्रम क्रमशः 28.8 एवं 12.5 डिग्री सेन्टीग्रेड होता है। फरवरी माह के दौरान उद्यान फसलों में संपन्न किये जाने वाले प्रमुख समसामयिक कृषि कार्यों का विवरण निम्नवत है –</p> <p>आम में मुख्य कृषि कार्य</p> <ul style="list-style-type: none"> ➤ इस समय आम के पेड़ पर फूल व फल आना शुरू हो जाता है। छोटे फलों को गिरने से रोकने के लिए 2,4-डी नामक दवा 2 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। छिड़काव फल मटर के दाने के बराबर हो जाने पर करना चाहिए। ➤ आम में चुर्णिल आसिता रोग से बचाव के लिए 2 ग्राम प्रति 1 लिटर के हिसाब से घुलनशील गंधक का छिड़काव करें। आम में यदि पुष्प कुरुपता दिखाई दे रही है तो गुच्छों को तुरंत काटकर नष्ट कर दें। ➤ श्यामव्रण (एन्थ्रेक्नोज) इस रोग की उग्रता की स्थिति में पत्तों एवं बढ़ते फलों पर इंडोफिल एम-45 नामक फफूंदनाशी (0.2%) का 2–3 छिड़काव करना चाहिए। रोग ग्रसित टहनियों तथा इसके प्रभाव से झड़े पत्तों को जलाना या गाड़ देना लाभकारी होता है। ➤ फफूंद जनित पिंक रोग के कारण पूर्ण विकसित पेड़ों की टहनियां एक दृएक करके सूखने लगती हैं। इसके नियंत्रण के लिए सूखी टहनियों को 15 से.मी.

		<p>नीचे से छांट कर उसके कटे भाग पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का लेप लगाना चाहिए तथा इसमें फफूंदनाशी का 2-3 छिड़काव करना चाहिए ।</p> <ul style="list-style-type: none"> ➤ आम में भुनगा कीट के रोकथाम के लिए इमिडाक्लोप्रिड 1.0 मिली. प्रति 3 लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। <p>पपीता में मुख्य कृषि कार्य</p> <ul style="list-style-type: none"> ➤ पपीता में तना गलन रोग के कारण भूमि की सतह से तना सडना शुरू हो जाता है । पौधा गिर जाता है। ➤ इस रोग से बचाव के लिए पानी का निकास ठीक करें तथा कॅप्टान 2 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। <p>शरीफा (सीताफल) में मुख्य कृषि कार्य</p> <ul style="list-style-type: none"> ➤ शरीफा जिसे सीताफल भी कहा जाता है। सीताफल में स्केल कीट टहनियां व फूलों का रस चूसकर उसे हानि पहुंचाता है। ➤ इसके नियंत्रण के लिए क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण 50 से 100 ग्राम प्रति पेड़ थाले में 10 से 25 सेंटीमीटर की गहराई पर मिलाएं। पेड़ पर डायमिथोएट 30 ई.सी. दवा 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करें। <p>नींबू में मुख्य कृषि कार्य</p> <ul style="list-style-type: none"> ➤ नींबू में सिट्रस कैंकर के कारण टहनियां, पत्तियां व फलों पर भूरे रंग के मध्य से फटे, खुरदरे व कॉर्कनुमा धब्बे बन जाते हैं। ➤ इसके नियंत्रण के लिए स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 100 मिलीग्राम व ताम्रयुक्त कवकनाशी दवा 2 ग्राम प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करें। ➤ नींबू के पौधों के मूलवृन्त तैयार करने के लिए नर्सरी में बीजों की बुवाई करें। मूलवृन्त एक वर्ष के हो जाएं तब उन पर कलिकायन करें। ➤ वायरस को फैलाने वाले कीड़ों के नियंत्रण का समुचित प्रबंध करें । इसके लिए नये कल्ले निकलते समय इमिडाक्लोप्रिड (3 मिली.10 ली.) या डाइमिथोएट (15 मिली.10 ली.) का घोल बनाकर दो-दो छिड़काव एकान्तर विधि से करें । ➤ किन्नो,संतरा व नींबू आदि फल वृक्षों में फूल एवं फल लगना प्रारंभ हो जाता है। इन पौधों के थालों की गुड़ाई कर खाद-उर्वरक डालें तथा आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें।
7.	वानिकी प्रबंधन	<ul style="list-style-type: none"> ➤ वानिकी पौधशाला में पुरानी पौध का स्थानांतरण सावधानी के साथ करें और मिट्टी से जुड़ी जड़ों को तेज धार वाले औजार से काटें। स्थानांतरण पश्चात् पौधों की सिंचाई करें। ➤ वानिकी पौधशाला को खरपतवार और रोग मुक्त रखें। ➤ कृषि वानिकी के अंतर्गत लगाए गए पेड़ों के थालों की निराई गुड़ाई, सिंचाई और टहनियों की छटाई करें ।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल-

1. डॉ जी. एस. पंवार	7. डॉ मयंक दुबे
2. डॉ दिनेश साह	8. डॉ अमित मिश्रा
3. डॉ ए.सी. मिश्रा	9. डॉ दिनेश गुप्ता
4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव	10. डॉ पंकज कुमार ओझा
5. डॉ राकेश पाण्डेय	11. डॉ सुभाष चंद्र सिंह
6. डॉ विवेक सिंह	